International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, RJIF (Impact Factor) 5.22
www.hindijournal.com
Volume 2; Issue 1; January 2016; Page No. 21

लोकप्रिय साहित्य का समाजशास्त्र

पूनम गुप्ता

जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

प्रस्तावना

जब कोई भी साहित्य व्यापक जन समुदाय के बीच सहज से ग्रहण एवं स्वीकार कर लिया जाता है तो उसे लोकप्रियता की संज्ञा दे दी जाती है। ऐसा साहित्य आसानी से लोगों के समझ में नहीं आता। इसके और भी वजह है। जीवन जगत से सन्दर्भित समाज की सच्चाई, स्वजन एवं आकांक्षाए भी जन समुदान के बीच में परोसी जाती हैं तब भी वह लोकप्रिय साहित्य माना जाता है। इसमें भी कोई न कोई मूल्य चेतना जरूर काम करती है। यहा लोकप्रियता के रूप को ही न बताकर उसके सन्दर्भ को भी बताना जरूरी है, क्योंकि रूप सम्बन्धी लोकप्रियता सतही तो होता ही है। साथ ही साथ रचना को भी निम्न स्तर पर ढकेल देती है।

आदिकाल से ही साहित्य के दो रूप देखने को मिलते हैं– शिष्ट साहित्य और लोक साहित्य। शिष्ट साहित्य के समानान्तर लोक साहित्य भी धीरे–धीरे आगे बढ़ता है। उच्च वर्ग के लोग शिष्ट साहित्य और उसी के सामने प्रतिरोध में जन साहित्य खड़ा रहता है। और करना चाहिए कि लोक साहित्य लोक प्रिय तो होता है लेकिन उससे भिन्न भी होता है। लोक साहित्य जन समुदाय द्वारा रचा और सुना जाता है। जबकि लोकप्रिय साहित्य पूंजीवादी युग के बाजारवाद की देन है। व्यावसायिकता के दौर में बाजार एवं प्रकाशन संस्थाओं द्वारा इसका उत्पादन होता है। उपभोग की अन्य वस्तु की तरह उसे भी उत्पादित कर बेचा जाता है। ऐसे में लोकप्रिय साहित्य लोक साहित्य से ही अलग नहीं होता बल्कि, जन साहित्य से भी अलग होता है। क्योंकि जन साहित्य भले ही जनता द्वारा न रचा जाता हो, परन्तु उनकी भावनाओं से तादात्म्य स्थापित करने वाले लेखक ही उसे रचते है। ऐसे में लोकप्रिय साहित्य शिष्ट साहित्य एवं जन साहित्य के बीच में खड़ा नजर आता है।

पूंजीवादी युग में शुरू से ही बाजार के हिसाब से साहित्य को हमारे सामने परोसा जाता है जो आर्थिक उददेश्य से लिया गया साहित्य है। इसमें प्रकाशन की बहुत बड़ी भूमिका होता है। जिसमें रचनाकारों को साहित्य एवं व्यक्तित्वहीन कर रचना को समाज में मिर्च मसाला लगाकर प्रस्तुत किया जाता है। आज यही काम मसाला गीत (Item Song) कर रहा है। बड़ी दुःखद बात है कि इस पूंजीवादी समाज ने मनुष्य की चेतना को खोखला (कुंद) कर अपने अनुकूल बना लेता है। उसमें अपना कुछ होता ही नही है। यही हाल लोक प्रिय साहित्य के लेखकों की भी है कि उनकी रचनाओं पर उनके नाम पर नहीं किताब के लेबुल एवं प्रकाशन के आधार पर बिकती है। हमारी चेतना पूंजीवादी मानसिकता द्वारा संचालित भी है। इसलिए हमें रचनाकार को जानने की जरूरत नहीं पड़ती।

अतः लोकप्रिय साहित्य के समाजशास्त्र को समझने के लिए यह जानना जरूरी हो जाता है कि वह कौन सा कारण है जिसके पीछे कोई न कोई मूल्य चेतना काम करती है जो साहित्यिक होने के साथ–साथ सामाजिक भी होता है। और लोकप्रिय साहित्य को अन्य साहित्य से अलग करता है। लोकप्रिय साहित्य समाज की चली आ रही पारम्परिक भावना के अनुकूल होती है। ऐसे साहित्य के समाज पसन्द करता है। और वही उसके लोकप्रियता का आधार भी होता है। बाजार के आने से उन्हीं भावनाओं को आर्थिक लाभ के लिए सजा–संवारकर परोसा जाता है। समाज जैसे जैसे बदलता है लोकप्रियता का आधार भी बदलता है। यही जरूरी नहीं भारत में जो भी लोकप्रियता के आधार हो वह अन्य देशों में भी हो। लोकप्रियता के लिए अधिक जरूरी है प्रचार–प्रसार विस्तार हो। उसके लिए देंखे तो ताकत किसके पास है। वो व्यवसाय ही है जो साहित्य को व्यवसायिक रूप में इस्तेमाल करते है। और उन्हीं के पास ताकत भी है। जरूरी नहीं है कि लोकप्रियता के लिए साहित्य में विशिष्टता हो साधारण भी हो सकता है, लेकिन उसे खास या नए तरीके से परोसा जाता है।

निष्कर्ष

इस प्रकार लोकप्रिय साहित्य सामाजिक संस्थाओं, सामाजिक मान्यताओं और सामाजिक श्रेणीबद्धता का ख्याल रखता है। लोकप्रियता समाज को तोड़ता नहीं है। यदि टी–सीरीज, फिल्म उद्योग कभी भी समाज को बदलने की बात नहीं करते। वह तो सारी मान्यताओं को बनाये रखते है। वह जानता है कि वह समाज को बदलने की बात करेगा तो उसकी पूंछ नहीं होगी। आज उसी की देन है–मसाला गीत। चूंकि समाज में परिवर्तन लाने वाली सभी चीज कष्टकारी होती है। इसलिए ये उनमें घुसना नहीं चाहते। इस मानसिक पीड़ा से बचने के बजाय मनोरंजन को चुनते है। जब कोई चली आ रही परम्परा को तोड़ता है। तब भी जनता इसी तर्ज पर उन लोगों के साथ खड़ी होती है। जब उसे लगता है कि उसके हित में कुछ होने वाला है। जैसे अंग्रेजों से लड़ाई–लड़ने के लिए भारतीय जनता इसलिए तैयार थी, क्योंकि उसे उसमें अपनी आजादी दिखाई दिया। वास्तविक आजादी उसे खुद कितना मिला यह एक अलग प्रश्न है। इस सारी बातों के माध्यम से लोकप्रिय साहित्य के समाजशास्त्र को समझा जा सकता है।